दिनांक :- 24-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

अंतर स्नातक :- 12th

विषय :- इतिहास अनुशांगिक

इकाई :- दो

अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता।

हड़प्पा के टीले का सबसे पहले 1826 ई० में चार्ल्स मैसन ने उल्लेख किया था। तत्पश्चात् जनरल कनिंघम ने 1853 तथा 1873 ई० में इसका सर्वेक्षण कर कुछ पुरावस्तुएँ प्राप्त की। 1912 ई० में जे० एफ० फ्लीट ने यहां से प्राप्त की गयी सामग्रियों पर रायल एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित पत्रिका में एक लेख प्रस्तुत किया। किंतु कनिंघम एवं फ्लीट हड़प्पा के पुरातात्विक महत्व का सही-सही मूल्यांकन करने में असमर्थ रहे। 1921 ई० में, सर जान मार्शल जब पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक थे, रायबहादुर दयाराम साहनी ने इस स्थल का पुनः अन्वेषण कर 1923-24 तथा 1924-25 के दौरान

उत्खनन कार्य करवाया। साहनी के पश्चात 1926-27 से 1933-34 ई० तक माधव स्वरूप वत्स के निर्देशन में हड़प्पा में खुदाइयाँ की गयी। 1946 ई० में सर मार्टीमर ह्वीलर के निर्देशन में उत्खनन कार्य करके पुरातात्विक महत्व की अनेक वस्तुयें प्राप्त की गयी। हड़प्पा की खुदाई से पता चलता है कि यह नगर लगभग पाँच किलोमीटर की परिधि में स्थित था। हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा-प्राचीर, निवास गृह, चबूतरे तथा अन्नागार महत्वपूर्ण है। नगर की रक्षा के लिये पश्चिम की ओर एक दुर्ग का निर्माण किया गया था। यह उत्तर से दक्षिण की ओर पाँच मीटर लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 195 मीटर चौड़ा है। जिस टीले पर यह दुर्ग बना है उसे ह्वीलर ने माउंड ए-बी की संज्ञा प्रदान की है। दुर्ग के चारों ओर एक सुरक्षा दीवार बनी थी जो अपने आधार पर 13.5 मीटर चौड़ी थी। इसमें स्थान-स्थान पर द्वार तथा उसके समीप रक्षक गृह बने हुए थे।

Scanned with CamScanner

~~जो अपने आधार पर 13.5 मीटर~~
हड़प्पा में मोहनजोदड़ो के समान विशाल भवनों के अवशेष नहीं मिलते हैं दुर्ग के उत्तर में स्थित 6.1 मीटर ऊँचे एक टीले (MoundF) की खुदाई से भवनों के अवशेष मिले है। इनकी दो भिन्न पंक्तियाँ हैं। उत्तरी पंक्ति में सात तथा दक्षिणी पंक्ति में आठ गृहों के अवशेष है। प्रत्येक का आकार 17x7.5 मीटर है। प्रत्येक गृह में कमरे तथा आंगन होते थे। इनमें मोहनजोदड़ो के गृहों की भाँति कुएँ नहीं मिलते। घरों के आकार-प्रकार से स्पष्ट है कि ये श्रमिक वर्ग के आवास रहे होंगे। घरों के उत्तर की दिशा में 18 गोल चबूतरे बने है जिनके बीच में एक बड़ा छेद है। जिनमें लकड़ी की ओखली लगी थी। इनमें लोग मूसलो से अनाज कूटते थे। यहाँ से जौ के दाने, जले गेहूँ तथा भूसी पाई गयी है। चबूतरों के ऊपर में अन्नागारों की दो पँक्तियाँ मिली है। प्रत्येक में छः-छः अन्नागार है। प्रत्येक 15.24x6.10 मीटर के

आकार का है। सभी के दरवाजे उत्तर दिशा में नदी की ओर थे। इनसे जलमार्ग द्वारा विभिन्न स्थानों में आसानी से अन्य भेजा जा सकता था।
मोहनजोदड़ो, जिसका सिंधी भाषा में अर्थ मृतकों का टीला होता है, की खोज सर्वप्रथम 1922 ई० में रखालदास बनर्जी ने करके इसके पुरातात्विक महत्व की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। 1922 से 1930 ई० तक सर जान मार्शल के निर्देशन में यहाँ उत्खनन कार्य करवाया गया। हड़प्पा के अवशेष की अपेक्षा अधिक सुरक्षित दशा में है। इनका विवरण इस प्रकार है।
यह मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक उल्लेखनीय स्मारक है जो उत्तर से दक्षिण तक 180 (54.86 मीटर) तथा पूर्व से पश्चिम तक की 108' (लगभग 33 मीटर) है। इसके केंद्रीय खुले प्रांगण के बीच जलकुण्ड या जलाशय बना है। यह 39 फुट (11.89m) लम्बा, 23 फुट (7.01m) चौड़ा तथा 8 फुट (2.44m) गहरा है। इसमें उतरने के लिये उत्तर तथा दक्षिण की ओर सीढ़ियां

बनी है। जलाशय की फर्श पक्की ईंटो की बनी है। फर्श तथा दीवार की जुड़ाई जिप्सम से की गयी है। बाहरी दीवार पर बिटुमेन का एक इंच मोटा (2.54cm) प्लस्तर लगाया गया है जिप्सम तथा बिटूमेन जलाशय को सुदृढ़ बनाते है। विशाल स्नानागार भवन के दक्षिणी-पश्चिमी छोर पर एक नाली थी जिसके द्वारा पानी निकलता था। जलाशय के तीन ओर बरामदे और उनके पीछे कई कमरे तथा गैलरियाँ थीं। इन्ही में से एक कमरे में ईंटो की खोखली पंक्ति से बनाया गया कुआँ था जिससे स्नानागार में पानी भरा जाता है। प्रत्येक कमरे में ईंटो की बनी सीढ़ी मिलती है। जिससे अनुमान किया जाता है कि इनके ऊपर दूसरी मंजिल भी रही होगी मैके का अनुमान है कि इसमें पुजारी रहते होंगे जो ऊपरी कक्ष में पूजा-पाठ करते तथा नीचे के कमरो में स्नान करते उतरते थे। वृहत्स्नानागार के उत्तर में छोटे स्नानागार बने है।

Scanned with CamScanner

सम्भवतः वृहत्स्नानागार सामान्य जनता के लिये था तथा इसका उपयोग धार्मिक समारोहों के अवसर पर किया जाता था इससे सूचित होता है कि सैंधव सभ्यता में धार्मिक कार्यों के लिये तथा शरीर संस्कार के लिये स्वच्छता का अत्यंत ऊँचा आदर्श था। मार्शल ने इसे तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण बताया है। डी० डी० कोशाम्बी वृहत्स्नागार की तुलना कालान्तर के संस्कृत स्थलों के ग्रंथ में अनेकशः वर्णित पुष्कर अथवा कमलताल से करते हैं जो धार्मिक संस्कार की तुलना कालान्तर संवेधित स्थान तथा शुद्धिकरण के अलावा राजाओं और पुरोहितों के अभिषेक के लिये आवश्यक माने जाते थे।

अन्नागार :- स्नानागार के पश्चिम में 1.52 मीटर ऊँचे चबूतरे पर निर्मित एक भवन मिला है जो पूर्व से पश्चिम में 45.72 मीटर लम्बा तथा उत्तर में दक्षिण

में 22.86 मीटर चौड़ा है। इसका ऊपरी ढाँचा जो शायद बाँस का बना था अब नष्ट हो गया है। इसे व्हीलर ने अन्नागार (Granary) बताया है। इसमें ईंटों से बने हुए विभिन्न आकार प्रकार के 27 प्रकोष्ठ मिले हैं। अन्नागार में हवा जाने के लिये स्थान बनाये गये थे। इसके उत्तर की ओर एक चबूतरा है जो अन्न रखने तथा इससे अन्न निकालने के समय उपयोग में लाया जाता होगा। अन्नागार का सुदृढ़ आकार-प्रकार हवा, आने-जाने की व्यवस्था तथा इसमें अन्न भरने की सुविधा आदि निःसंदेह उच्चकोटि की थी। विद्वानों का विचार है कि यह राजकीय भण्डारागार था जिसमें जनता से कर के रूप में वसूल किया हुआ अनाज रखा जाता था। मिस्र तथा मेसोपोटामिया की सभ्यताओं में भी इस प्रकार के अन्नागार के अवशेष मिलते हैं।

पुरोहित आवास:- वृहत्स्नानागार के उत्तर पूर्व में है।

Scanned with CamScanner